ISSN : 2348-0114
Impact Factor : 2.332
मूल्य : ₹ 600

वर्ष : 4
अंक : 16
(अगस्त 2017–अक्टूबर 2017)
www.chintanresearchjournal.com
(UGC Approved List No. 42742)

संपादक
आचार्य (डॉ.) शीलक राम

हिन्दू

(International Refereed)

कला, साहित्य, मानविकी, समाज–विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन, विधि एवं विज्ञान विषयों का अंतरराष्ट्रीय मूल्यांकित त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

आचार्य अकादमी, भारत
ISO : 9001:2008

website : www.chintanresearchjournal.com

ISSN : 2348-0114
Impact Factor 2.632

International Refereed

हिन्दू

अतरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(UGC Approved Journals List Sr. No. 42742)

वर्ष : 4 अंक : 16
श्रावण विक्रमी सम्वत् : 2074
अगस्त - अक्तुबर 2017

सम्पादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

(ISO : 9001 : 2008)

शोध–आलेखानुक्रम

सम्पादकीय
* किसान की व्यथा-कथा का सांगी : चंद्रलाल बादी
  डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर 12-17
* An Analysis of Changing Nature of the Office of C&AG
  Jyoti 18-25
* Genetic and Environmental Influences on Human Behaviorral Differences
  Dr. Rekha 26-31
* Crimes and Punishments in Medieval Period
  Dr. K. Somasekhar 32-35
* GONOO: A Tribal Hero of 1857 Revolt in Chotanagpur
  Dr S N Singh 36-38
* Right to Maintenance: An Indian Perspective
  Alka Rani 39-42
* Exchange Rate
  Ajay Singh 43-47
* Socio-Legal Aspects of Surrogacy in India
  Usha Kiran 48-52
* Man's Alienation from Man and Nature in the Poetry of Nissim Ezekiel
  Payal Jain 53-57
* The Role of Some Social Forces for Determing The Behaviour of Khap Panchayat in Haryana: An Analysis
  Manu Dev 58-63
* Gender Equality: Yet a Distant Dream
  Manjit Kaur 64-67
* Impact of the Second Administrative Reforms Commission Reports – An Assessment
  K. Sukumar 68-71
* E-Commerce in India
  Dr. Kumbampati Pullarao 72-73
* Management Theories in Kautilya's Arthashastra
  Mandala Venkat Reddy 74-78
* Socio-Cultural Relations in Telugu Literature
  Sandhya Rani, M. 79-85
* Skill India: A Long Way to Go
  Swati 86-93
* Position of Martial Rape in India
  Dr. Preety Jain 94-97
* Reservation Policy for Admission in Educational Institutions and Its Relevancy in Modern India
  Sanjay Kumar 98-107
* वाल्मीकि रामायण में सांस्कृतिक परिवेश का अध्ययन-विश्लेषण
  डॉ॰ मनजीत कौर 108-111
* पाण्डुलिपिविज्ञान : एक अध्ययन
  डॉ॰ पूनम 112-114

(International Refereed)
Impact Factor 2.632

हिन्दू अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध-पत्रिका
वर्ष:4, अंक:16 (अगस्त-अक्टूबर, 2017) (पृ.सं. 12-17) (ISSN 2348 - 0114)

किसान की व्यथा-कथा का सांगी : चंद्रलाल बादी

डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर
एसोशिएट प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग, आर.के.एस.डी. (पी.जी.)
कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

कवि चंद्रलाल की दूर-दृष्टि इस मायने में भी सकारात्मक दिखाई देती है कि उन्होंने किसान के जीवन को सम्मानपूर्वक गरिमा दी है। उनके दो सांगों, 'धन्ना भगत' और 'कमला मदन' में उन्होंने किसानी-जीवन को साकार कर दिया है। 'धन्ना भगत' सांग में तो उन्होंने किसान की ईमानदारी, परिश्रम और जुझारू प्रवृत्ति में भगवान का साथ दिखाकर यह साबित किया है कि परिश्रम करने वाले के साथ ईश्वर भी सहायक के रूप में होते हैं। इस सांग में वे भारत के किसान का मनोबल बढ़ाते हुए कहते हैं कि यद्यपि किसान का जीवन संकटों, कष्टों और खतरों से परिपूर्ण होता हैं, तथापि वह देश की अर्थ-व्यवस्था को प्रभावित करने वाला सच्चा देशभक्त होता है। सीमा पर देश की रक्षा के लिए खड़े फौजी से उसका जीवन किसी भी मामले में कम नहीं होता।

मुख्य-शब्द : जुझारू प्रवृत्ति, प्रतीकात्मक, ईमानदार और कर्त्तव्य-परायण, सृजनात्मकता ।

हरियाणा में चुनिंदा सांगियों में चंद्रलाल बादी जी का अहम् स्थान है। पूरे हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, मुंबई और पाकिस्तान तक अपनी कला का परचम लहराने वाले चंद्रलाल बादी जी ने सांग विधा को जो ऊंचाइयां प्रदान कीं, शायद ही किसी ने की होगी। अपने समग्र में वे सर्वाधिक लोकप्रिय सांगी हुए, जिनकी प्रखर और रंजक शैली ने नए कीर्तिमान स्थापित किए।

चंद्रलाल बादी का जन्म 3 अगस्त 1917[1] को रक्षाबंधन के दिन हरियाणा में वर्तमान में जिला चरखी दादरी में गांव चरखी में हुआ था। बाद में इनके माता-पिता उत्तर प्रदेश में मेरठ में गांव दत्तनगर में जाकर बस गए थे। इनके पिता का नाम मा. सोहनलाल तथा मां का नाम चावली देवी था।

चंद्रलाल जी ने अनेक मौलिक सांगों की रचना की। अपने जीवनकाल में उन्होंने पचास के आसपास सांगों का सृजन किया। जिनमें से सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, हीर-रांझा, नौबहार-धर्मदेवी, बीजा सोरठ, मोहना देवी-रामकुमार, चम्पादे माली की, अमरसिंह राठौड़, चन्द्रपाल-सुमित्रा, गजना गोरी, कमला-मदन, सत्यवान-सावित्री, पृथ्वीसिंह-किरणमई, रूपा-रेल्लू राधेश्याम, धन्ना भक्त, विश्वामित्र-हूर मेनका, शकुंतला दुष्यंत, मायादेवी-रणतेज कुंवर, अजीतसिंह राजबाला, गुलशन गुलबहार, शाही लाल बहार, सांग कीचक वध, गऊ-हरण, रूप-बसंत, भारत-इंग्लैण्ड, रतना-बादल, पृथ्वीराज चौहान आदि प्रमुख हैं।

किसान इस दुनिया में सच्चा धरती पुत्र है। वह भक्त, साधक, गृहस्थ, संत आदि एक साथ सब कुछ है। वह जीवनोपयोगी वस्तुओं का उत्पादक है। उसी से सबका जीवन चलायमान रहता है। वह फसल उगाता है और जगत का पेट भरता है। भारत की अर्थ-व्यवस्था में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उसकी कमाई से भारत के